रस्म से सच्चे परमेश्वर से सम्बन्ध तक का सफ़र
(From Rituals to Relationship with God)

मेरा एक बहुत ही रुढ़िवादी दक्षिण भारत के ब्रह्मिन परिवार में जनम हुआ. हम चार बच्चे हैं, मेरे दो भाई और एक बहन हैं. मेरी माँ एक गृहणी थी. बचपन से, मुझे शिक्षा दी गयी थी की मैं, हिन्दू रीति रिवाजो, परम्पराओ, रस्मों और प्रथाओं का पालन बहुत सी सख्ती के साथ करूँ. मैं रोज सुबह जल्दी उठ जाता, घर के पास नदी पर जाकर स्नान करता और फिर हिन्दू देवी देवताओं की उपासना करता. मैं नियमित रूप से हिन्दू मंदिर जाता और अपने देवताओं को खुश करने के लिए नारियल की भेट चढ़ाता. हमारा बड़ा सा घर था, और घर के बीच में सांप का एक बिल था. इस बिल में एक नाग रहता था. हिन्दू मान्यता में नाग को बहुत ही पवित्र माना जाता हैं. तो हमारे परिवार के सारे सदस्य उस नाग के सामने नियमित रूप से श्लोक और मन्त्र पढ़ते. हमें उस नाग से डर बिलकुल  नहीं लगता था, क्यूंकि हम सब एक ही घर में रहते थे और वह भी परिवार का एक सदस्य के नाई  हो गया था.

मैं बचपन के दिन से काफी धार्मिक थी, और मैंने एक निर्णय लिया था की मैं हिन्दू देवी संतोषी माता का एक कट्टर भक्त बनूँगी. इस देवी की पूजा हिन्दू महिलायें अपने घर के देखभाल और समृधि के लिए करती हैं. मैंने यह शपत ली की मैं अपने जीवन भर इस देवी की पूजा करूँगा. मैंने हर शुक्रवार को उपवास रखने, कुछ खादपदार्थ से अपने आप को दूर रखने की और इस देवी की दैनिक पूजा करने की शपत भी ली. पूजा करने के पश्चात मैं प्रसाद लेता, गाय को भेंट चढ़ाता और फिर खुद खाता.

मेरे पिता मेहनत करके काम करते. उनके मित्रों ने सुझाव दिया की वे अपने नौकरी से इस्तीफा देकर एक निजी कारोबार खोल ले. उनका निजी व्यवसाय असफल हो गया और उनको भारी नुक्सान उठाना पड़ा. मित्रों के आग्रह के कारण, मेरे पिता अरब देशों में नौकरी की तलाश पर घर छोड़ कर चल दिए. मैं भावनात्मक रूप से अपने पिता के बहुत निकट था. उनके घर(भारत) छोड़ कर जाने के बाद, मुझे उनकी काफी याद आने लगी, मैं अपने पिताजी से सुनने के लिए बेताब हुआ करता था, लेकिन वे कभी भी हमसे संवाद नहीं करते थे. मैं बहुत परेशान और उदास था.

इस समय मैं अपनी ज़िन्दगी में पहली बार यीशु मसीह के बारे में कुछ कैथोलिक नन के द्वारा सुना जो हमारे घर के पास रहते थे. मेरी बड़ी बहन ने पहले से ही हिन्दू परम्पराओं और विश्वास को त्याग दिया था. उसने यीशु पर विश्वास करने के बाद, उसने अपने पापों से क्षमा और उनके प्रेम का अनुभव किया. उनका जीवन बदल गया. वो यीशु में अपने विश्वास के बारे में खुल के चार लोगों के बीच में बोलत थी. उसने मुझे अपने विश्वास के बारे में बताया और अन्य इसाईयों से

मिलने मुझे विभिन्न सभाओं में लेकर गयी. मुझे यह पसंद नहीं था और मैं उसके इसाई मित्रों को अपमानित करने लगा. मैं उनका मजाक उढाता और मजा लेता. यह इसाई मुझसे नफरत नहीं करते थे, इसके बजाय वे मुझसे प्यार करते थे. एक दिन उस चर्च के पादरी सुश्री आर. एम्. ने मेरे लिए प्रार्थना किया और मैं फूट फूट कर रोने लगा, यह महसूस किये बिना की मैं रो रहा हूँ. बाद में कुछ और इसाई मित्र ने प्रार्थना की और मुझे प्रभु यीशु के बारे में और जानकारी दी. उन्होंने मुझे कुछ किताबे, पत्रिकाएं और टेप भी दिया जिसके द्वारा मैं यीशु के बारे में और जान सकू. अकेले में मैं विभिन्न पृष्ठभूमियों से आये उन सारे लोगों की जीवन की कथाये पढ़ा जिन्होंने यीशु मसीह पर अपना विश्वास रखा था. धीरे धीरे मैं यीशु की ओर खिचने लगा और मुझे यह एहसास हुआ की यीशु ही सच्चा, जीवित और प्रेमी प्रभु हैं. जीवन में पहली बार मुझे यह एहसास हुआ की मैं पापी हूँ और मुझे पापों की क्षमा की आवश्यकता हैं. जैसे ही मैंने यीशु के प्यार और क्षमा का अनुभव किया, मैंने सारे हिन्दू धर्म से सम्बंधित धार्मिक अनुष्ठान बंद किया और हिन्दू देवी संतोषी माँ को पूजना भी छोड़ दिया. मैं बाइबल पढने लगा और यीशु को प्रार्थना करने लगा. मैं उनके बारे में और अधिक जानने लगा और अपने दैनिक जीवन में उनके साथ सम्बन्ध का अनुभव भी किया. मुझे यह मालूम हुआ की यीशु सच्चे हैं और वे मेरी दैनिक समस्याओं में मेरी सहायता करेंगे.

इस समय मैंने स्नातक नर्सिंग (बी. एसी. नर्सिंग का तृतीय वर्ष) का परीक्षा दिया था और परिणाम की प्रतीक्षा कर रहा था. मैं यह जान के चौक गया की मैं परीक्षा में केवल दो अंक से असफल हो गया हूँ. मैं बहुत निराश और हताश हो गया, लेकिन यीशु ने जो बयान दिया था, 'पहले उसके (परमेश्वर) के राज्य के खोजी बनो फिर तुम्हे सारी चीजे (सफलता, ख़ुशी और धन)
दी जायेंगी 'इस बयान से मुझे काफी हिम्मत मिली. मैं परमेश्वर के उपस्थिति को महसूस करने लगा और अदभुत आतंरिक शांति का अनुभव किया. एक और समय हमें अपना घर बेच कर अलग पड़ोस में उसी कीमत पर एक और घर की खोज करनी पड़ी. मैंने यीशु से प्रार्थना की और उन्होंने मेरे प्रार्थना का उत्तर दिया. कॉलेज खत्म करने के बाद, मैंने नौकरी के लिए आवेदन किया, लेकिन रिश्वत या किसी जानपहचान के प्रभाव के बिना सरकारी नौकरी मिलना मुश्किल था. मैं सरकारी नौकरी के लिए भ्रष्ट अधिकारियों को रिश्वत नहीं देना चाहता था. मैंने प्रार्थना किया और परमेश्वर ने मेरी प्रार्थना सुन मुझे मेरी वांछित स्थान पर सरकारी नौकरी दे दी.

यीशु ने मुझे एक प्यार करने वाला पति देकर आशीष दी. मेरे पति भी यीशु पर विश्वास करते थे. हमें एक बेटे के साथ धन्य किया. हम यीशु के लिए जीना चाहते हैं और उनके प्यार को जीवन भर दूसरों में बांटना चाहते हैं.

श्रीमती एम्. के
हैदराबाद, भारत

ब्रह्मण- हिन्दू पुरोहित जाती का एक सदस्य

पूजा - हिन्दू अनुष्ठान

हिन्दू - हिन्दू धर्म का अनुयायी

मंदिर- हिन्दू का पूजा करने की जगह

मन्त्र - एक ध्वनी का प्रतीक, जादू

श्लोक- हिन्दू पूजा का तेजस्वी रूप
नाग - एक बहुत जहरीला सांप जिसका काटना अक्सर घातक होता हैं

प्रसाद- भगवान् को पेश किया हुआ भोजन जो बाद में भक्तों के बीच में बांटा जाता हैं.

गाय - हिन्दुओं के लिए एक पवित्र पशु

कैथोलिक नन - महिलाए जो धार्मिक (इसाई) मन्नत मानने के बाद एक एकांत का जीवन भगवान् की सेवा में बिताते हैं